MSK 006

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम (MSK)

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिये

MSK 006 भाषाविज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

(द्वितीय वर्ष)

मानविकीविद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नईदिल्ली– 110068

एम.ए संस्कृत कार्यक्रम (MSK)

MSK 006 भाषाविज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

(द्वितीय वर्ष)

सत्रीय कार्य

जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिये

पाठ्यक्रम कोड : MSK-006/2024&25

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यसामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्यसामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तरपुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

.

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययनः सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढगं से व्यवस्थित कीजिए।
2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्वनोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किकढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण सम्बन्धी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुन्दर अक्षरों में उत्तरपुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जुलाई 2024 सत्र के लिए 31 मार्च 2025

जनवरी 2025 सत्र के लिए : 30 सितंबर 2025

सत्रीय कार्य

जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिये

MSK 006 भाषाविज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

पाठ्यक्रमकोड–MSK 006

पाठ्यक्रम – भाषाविज्ञान ,अनुवाद एवं निबन्ध लेखन

प्र. 1.किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 5×15

क. भाषाविज्ञाान का अर्थ , क्षेत्र व अंग पर लेख लिखिए ।

ख .ध्वनिपरिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए ।

ग.लौकिक तथा वैदिक संस्कृत में अन्तर लिखते हुए स्पष्ट कीजिए ।

घ .भारत–ईरानी या हिन्दी–ईरानी शाखा पर लेख लिखिए ।

ड. स्वर एवंव्यंजन ध्वनियों के वर्गीकरण को लिखिए ।

च. ध्वनि नियमों की व्याख्या कीजिए ।

प्र. 2 निम्न में से किसी एक पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 15

भारतीय दर्शनम्

अथवा

अहिंसा परमो धर्मः

प्र. 3 .निम्नलिखित में से किसी एक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए । 10

क. अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यांभगवतोमरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचर–चक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बोरोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्चदिनस्य।अयमेवअहोरात्रं जनयति, अयमेववत्सरं द्वादशसुभागेषुविभनक्ति, अयमेवकारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरंदक्षिणंचायनम्, एनेनैवसम्पादिता युगभेदाः, एनेनैवकृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवतिपरमेष्ठिनः परार्द्धसङ्खया, असावेवचर्कर्तिबर्भर्तिजर्हर्तिं च जगत्, वेदा एतस्यैववन्दिनःगायत्री अमुमेवगायति, ब्रह्मनिष्ठाब्राह्मणाअमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलंश्रीरामचन्द्रस्य प्रणम्य एष विश्वेषामितिउदेष्यन्तंभास्वन्तंप्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्रामकश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः।

अथवा

ख.तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताकासर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगाक्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, संगीतशालाभ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरीदोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलतासत्पुरुषव्यवहाराणाम्, अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्,प्रस्तावनाकपटनाटकस्य, कदलिकाकामकरिणः, वध्यशालासाधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य। न हितंपश्यामि योह्यपरिचितयानया न निर्भ्ज्ञरमुपगूढः, यो वा न विप्रलब्धः।नियतमियमालेख्यगतापिचलति, पुस्तमय्यपीन्द्रजालमाचरति, उत्कीर्णापिविप्रलभते, श्रुताप्यभिसन्धत्ते, चिन्तितापिवञचयति।